प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक - **14-01 - 2008**

सवर्ण हिन्दुओं द्वारा सतनामी सरपंच की निर्मम हत्या कर जिन्दा जलाया गया

विगत दिनांक **10** जनवरी **2008**ः

प्राप्त जानकारी के अनुसार विगत दस जनवरी **2008** को जब पूरा देश नव वर्ष की खुशियॉ मनाने में लगा हुआ था तब औराबांधा (जिला दुर्ग) की तरह पुनः कुछ असामाजिक तत्व षडयंत्र कर घिनौनी अमानवीय घटना को अन्जाम देने में लगे हुए थे। यह घटना रायपुर जिला के तिलदा ब्लाक में सुहेला थाना के अन्तर्गत ग्राम फूलवारी की है। फूलवारी पंचायत के अन्तर्गत दो गांव आते है जिसमें नेवारी भी शामिल है। नेवारी और फूलवारी दोनों की सीमा के बीच केवल एक तालाब का फासला है। दोनों गांव का फासला लगभग **100** मीटर ही होगा। ठकेन्द्र भारद्वाज दोनों गांव का सामूहिक सरपंच था। फूलवारी में लगभग **250** घर के साहू परिवार के अलावा आठ दस घर के रावत व कुछ गोड़ आदिवासी व केवल सात घर के सतनामी निवास करते हैं। फूलवारी गांव में सतनामियों की संख्या बहुत कम होने के बावजूद अपनी क्षमता, कार्यकुशलता व मिलनसार होने के कारण ठकेन्द्र सरपंच बना हुआ था। बच्चे बूढ़े सब सरपंच का आदर करते थे। सरपंच के मेहनत से गांव में बंधा निर्माण की स्वीकृति हुई है जिसमे जल्दी काम शुरू होने वाला था। नेवारी गांव वालों को बांध तालाब की सीमा को लेकर कुछ आपत्ति होने लगा था। जबकि बांध दोनों गांव की सीमा से लगा हुआ है। इसी सीमा को लेकर दोनों गांव में मनमुटाव होने लगा। ठकेन्द्र फूलवारी गांव में रहने के कारण उसे ही निशाना बनाया गया।

घटना से एक दिन पहले फुलवारी गांव में मड़ई (राउत नाचा) हो रहा था। मड़ई मे अकसर गांव के प्रधान को स्वागत हेतु आमंत्रित करते है। लेकिन पीछे शैतानी दिमाक काम कर रहा था और योजना बद्ध तरीके से सरपंच को आमंत्रण नहीं दिया गया। सरपंच ने अपने अपमान समझ कर गांव के सवर्ण हिन्दुओं को अपनी बात रखी। मामला यहीं शांत नहीं हुआ और शातिर दिमाक जो पीछे काम कर रहा था मौके की तलाश में था। सांप्रदायिक ताकतों को लोगों को उकसाया। मौका पाते ही दूसरे दिन सुबह दो ढाई सौ की संख्या में लोग इकट्ठा हो सरपंच की तलाश में निकल पड़े। सरपंच सुबह लगभग साढ़े आठ नौ बजे तालाब में गुड़ाखु मंजन कर रहा था। बताया जाता है कि उसी समय कुछ लोगों के साथ तिजउ नाम का एक व्यक्ति ने आकर सरपंच के पैर की ओर झूका। सरपंच को लगा कि वह मड़ई के बाद प्रणाम करने आया है और बाकी भीड़ भी शायद उनका आशीर्वाद लेने आ रहे है। उसे अपाने हत्यारों के बारे में किसी भी तरह की षडयंत्र का आभास नहीं था। क्योंकि पूर्व में ऐसी कोई घटना नहीं घटी थी। तिजउ ने नीचे झूक कर सरपंच ठकेन्द्र को पैर पकड़ लिया तथा साखाराम व अन्य मिलकर सरपंच को मारने लगे। किसी तरह छुड़ाकर सरपंच वहॉ से भागा और अपने घर पहुॅच कर परिस्थिति को भांपते हुए लोहे का सटर लगाकर उसमें भीतर से ताला लगा दिया तथा अपने परिवार को घर के अन्दर छिपा लेने में बुद्धिमत्ता समझा।

ऐसा बताया जाता है कि कुछ देर बाद दो ढाई सौ हिन्दु सवर्णो की पूरी फौज झ्रुस्प3ल्भीड़झ्राुक्तएल्र योजनाबद्ध तरीके से सरपंच के घर में कूच कर दिया। आधा पौन घंटे तक लोहे का सटर तोड़ते रहे। सटर टूट जाने पर लोग घर के भीतर टूट पड़े। कुछ लोग सरपंच के घर का सामान इधर ऊधर तोड़ते हुए बिखरने लगे। साखाराम जो भूतपूवे सरपंच रहा है वर्तमान में केवल पंच है अपने हार का बदला लेने का मौका मिल गया वह अपने तीनों लड़कों व सोमनाथ जगदीश के साथ घर के भीतर सरपंच ठकेन्द्र पर टूट पड़े। ठगेन्द्र अकेला पड़ गया और सवर्ण सांप्रदायिक ताकते सैकड़ों में चारों तरफ से घिर गया। आस पास के लोग भय के कारण बचाव के लिए उसके पास नहीं पहुॅच सके। ठकेन्द्र की पत्नि बीच बचाव के लिए आई उसे बुरी तरह मारते हुए अश्लील हरकत के साथ घायल कर दिया गया। अभी रायपुर अस्पताल में जीवन मरण के बीच जूझ रही है। सरपंच की बेटी भी बीच में आई और वह भी अश्लील हरकतों के साथ गंभीर चोट खायी उस पर हंसिया से हमला किया गया जान बचाते- बचाते हाथ पर गंभीर चोट लगा है। सरपंच ठकेन्द्र घायल अवस्था में ही जान बचाते हुए घर से बाहर भागा। अपनी जान बचाने के लिए भूतपूर्व सरपंच खुमानु साहू के दरवाजे में पहॅुचा लेकिन खुमानु ने भी भीड़ से भय खाकर अपना दरवाजा बन्द कर लिया। खूनी दरिन्दे टूट पड़े और खुमानु के घर के बाहर सरपंच ठकेन्द्र का हाथ पैर काट डाले व अधमारा हालत में सरपंच को उसके घर के पास घसीटते हुय पुन लाये तथा उसी के घर के सामान को लकड़ी के पलंग कुर्सी सोफा टीवी कपड़े इत्यादि को जलाकर उसी में सरपंच को बर्बरतापूर्वक जिन्दा जला दिये। केसतरा के बाद सवर्ण सांप्रदायिक मानसिकता का शिकार एक और सम्मानित ग्राम प्रधान केवल सतनामी होने के नाते हो बली चढ़ गया।

बताया जाता है कि घटना की पूरी खबर एसडीओ पी शुक्ला को पहले से था। इसी बीच घटना की खबर पाते ही तिलदाबांधा के सरपंच कमलप्रसाद जोशी ने तत्काल पुलिस थाना सुहेला को खबर पहुचाया लेकिन पुलिस खामोश सुनती रही वहॅा घटना स्थल पर जाकर सरपंच की जान बचाने का कोई प्रयास नहीं किया। पड़कीडीह के राजू चतुर्वेदी ने समय रहते हुए घटना की खबर पाते ही पुलिस थाना को तीन बार अपने मोबाइल से सूचना देने का प्रयास किया। लेकिन थाना प्रभारी ने कोई ध्यान नहीं दिया शायद उन्हे पूर्व आदेश रहा हो वहॅा नहीं जाने का बरना समय रहते कार्यवाही करने पर यह घटना टला सकता था। पुलिस शायद घटना से पूर्व जानकार थी जिसका नमूना एसडीओपी शुक्ला जी के बयान से पता चलता है कि एक इज्जतदार ग्राम प्रधान तत्कालिन सरपंच को निगरानीशुदा बदमाश करार दे रही है। भला सरपंच जैसे सम्मानीय पदासीन व्यक्ति को जनता ने अपना जन प्रतिनीधि चयन किया यह तो न केवल प्रतिनीधित्व कानून का अवहेलना है बल्कि प्रजातंत्र का खुला अपमान है जिसे मौन करार देते हुए सरकार चुपचाप देख रही है।

ऐसा लगता है कि सरकारी तंत्र इस नियोजित षडयंत्र का मूक समर्थक है और घटना के अंजाम से वाकिफ थी अन्यथा खूनी दरिन्दे बेखौफ सड़कों पर खुला आतंक फैलाते नजर नहीं आते। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि जिन लोगों ने हत्या किया उनमें से एक भी अभी पकड़ा नहीं गया है। कुछ बूढ़े लोगों को समझाबूझा कर योजनाबद्ध तरीके से गिरफ्तार किया गया है और वास्तविक खूनी बाहर गवाहों को डराने धमकाने में लगे हुए हैं। यह भी बताया गया है कि यदि किसी ने इस घटना को बताने या गवाह बनने क कोशिश करेगा उसका भी वही अन्जाम होगा जो सरपंच ठकेन्द्र का हुआ है। क्षेत्र में भय का वातावरण व्याप्त है। सरकारी तंत्र खासकर उपपुलिस अधीक्षक का बयान इस बात का

सबूत देता है। क्या सरकाार से स्वतंत्र न्याय की आशा की जा सकती है? क्या सरकाार इस पूरी घटना की सी बी आई जांच कराकर अपना निष्कलंक छवि का परिचय देगी। या मामला को तोड़ मरोड़ कर पेश करने का प्रयास करेगी। हम मानव अधिकार आयोग से भी आग्रह करेंगे की वह इस अमानवीय घटना का निष्पक्ष जांच कराने और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने में मदद करे।

ऐसा भी बताया जाता है कि घटना के एक दिन पहले ही आस पास के कई गांवों में ऐसी घटना होने की खबर थी जिसकी योजना गुप्त रूप से तैयार की जा रही थी। भाठापारा का एक पत्रकार भी इस बात को पुष्टि करता है लेकिन वह भी भय वश अपना नाम नहीं बताना चाहता।

आओ हम सब मिलकर मानवता के हित में इन हत्यारों की कुत्सित मनसा का खुलकर भर्त्सना करे। आपसे अनुरोध है कि सत्यता को सामने लाने में हमारा मदद करें।

द्वारा ः

अध्यक्ष

सतनाम कल्याण व गुरू घासीदास चेतना संस्थान